

आम नागरिक हेतु निवेश रणनीति: आपदा काल के विशेष संदर्भ में।

राकेश चन्द्र छिम्वाल, पीएच0डी0, नेट, रामनगर, नैनीताल।

Date of Submission: 10-12-2021

Revised: 20-12-2021

Date of Acceptance: 25-12-2021

सारांश: वर्तमान में बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज के संवेदी सूचकांक ने साठ हजार के मनोवैज्ञानिक स्तर को प्राप्त कर लिया है। जिसके और ऊपर जाने की सम्भावना है। आपदा काल में अर्थव्यवस्था के आधारभूत संकेतक ज्यादा अच्छे

नहीं हैं बावजूद इसके सूचकांक ऐतिहासिक रूप से उच्चतर स्तर पर है। यह तेजी बाजार में आ रही अत्यधिक तरलता के कारण है। बाजार विशेषज्ञों के अनुसार वर्तमान समय शेयर बाजार से दूर रहने का है। जहाँ शेअर बाजार ने एक वर्ष के अन्दर शत-प्रतिशत प्रतिफल दिया है वहीं दूसरी ओर देश की अधिकांश जनसंख्या को अपनी बचतों पर प्रतिफल महंगाई की दर से कम प्राप्त हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी बचतों का शुद्ध मूल्य घट रहा है। किन्तु निवेश एक सतत प्रक्रिया है अतः तेजी की दशा में निवेश किया जाना चाहिए अथवा नहीं ?

कुंजी शब्द: निवेश, शेयर, म्यूचुअल फंड, स्टॉक एक्सचेंज, सेंसेक्स, वित्तीय नियोजन।

परिचय

बचत एवं निवेश व्यक्तिगत वित्तीय प्रबन्धन का उद्देश्य है। आय का व्यय पर आधिक्य बचत है। बचत करना आय अर्जित करने के सामान ही महत्वपूर्ण वित्तीय कार्य है। समृद्धि व वित्तीय सुरक्षा बचत की आदतों पर निर्भर करती है। यदि निवेश योजनाबद्ध तरीके से तथा निरन्तर किया

जाए तो वित्तीय आवश्यकताएं पूर्ण की जा सकती हैं।

निवेश हेतु भारतीय परिदृश्य में कई विकल्प मौजूद हैं। कोविड-19 के फैलाव से पूर्व भारतीयों की निवेश आदतों में महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिला। यह बदलाव था आम भारतीयों की महंगाई से अधिक रिटर्न की चाह। वर्तमान में कई नागरिक परम्परागत निवेश माध्यमों से इतर अन्य माध्यमों जैसे शेयर, म्यूचुअल फंड आदि में निवेश कर रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान लगभग 12 लाख नये डीमैट खाते प्रति माह खुले जो पिछले वित्तीय वर्ष में 4 लाख डीमैट खाते प्रतिमाह की तुलना में तीन गुने हैं। वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान वर्तमान तक औसतन 26 लाख डीमैट खाते प्रति माह खुल रहे हैं। पिछले दो वित्तीय वर्षों में 58 से 53 लाख नये सिप(&79) खाते जुड़े। वहीं वित्तीय वर्ष 2021-22 के प्रथम पाँच माह के दौरान लगभग 59 लाख नये निवेशकों ने सिप के माध्यम से म्यूचुअल फंड्स में निवेश किया।

शोधपत्र का उद्देश्य

> एक निम्न मध्यम वर्गीय आम भारतीय हेतु परम्परागत वित्तीय उत्पादों से इतर नये व

लाभदायक वित्तीय निवेश माध्यमों की आधारभूत जानकारियां उपलब्ध कराना।

> भारत का एक बड़ा वर्ग जो नियमित आय अर्जित कर रहा है उसके लिए निवेश विकल्पों पर विचार करना।

> भारत के ग्रामीण क्षेत्रों, कस्बों तथा छोटे शहरों में निवेश सम्भावना, निवेश गंतव्यों पर विचार करना।

> बदलती उम्र के अनुसार उचित निवेश रणनीति तथा वित्तीय योजना पर विचार करना।

> अंतोगत्वा एक आम भारतीय युवा के जीवनपर्यंत हेतु समग्र वित्तीय कार्ययोजना की रूपरेखा प्रस्तुत करना ।

शोध विधि:

वित्तीय कार्ययोजना बनाने हेतु कई विशेषज्ञ राय मौजूद हैं। किंतु आम नागरिकों हेतु ज्यादा विकल्प नहीं हैं। इसी प्रकार न्यूनि रूप से उपलब्ध द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। यह शोध पत्र द्वितीयक आँकड़ों का विस्तृत विवेचन कर तैयार किया गया है। ये द्वितीयक आँकड़े प्रकाशित पुस्तकों, सरकारी प्रकाशनों, सरकारी प्रतिवेदनों, विभिन्न जनरल में प्रकाशित शोधपत्रों के माध्यम से प्राप्त किये गये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी वेबसाइटों से भी विषय को समझने हेतु प्रकाशित सामग्री का विस्तृत अध्ययन किया गया।

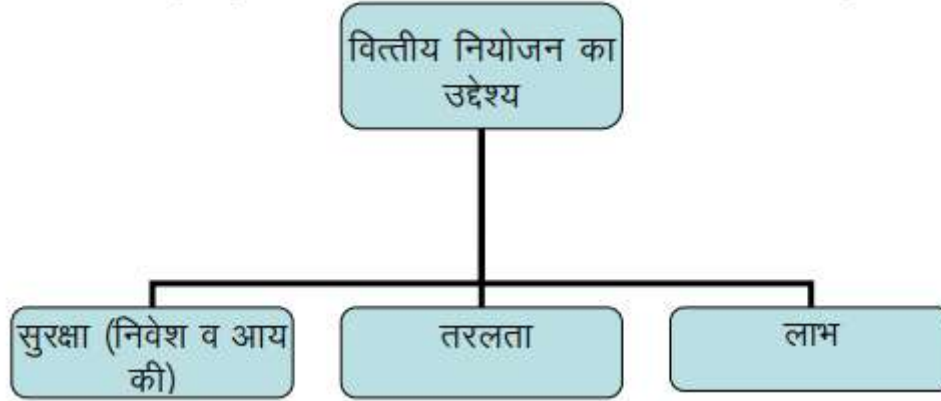
विश्लेषण

बड़े निवेश समूह कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का प्रयोग कर रहे हैं। लाभ प्राप्ति हेतु यह कार्य जटिल व विशेषज्ञता पूर्ण होता जा रहा है। इन अत्याधुनिक

साधनों की पहुँच कुछ ही निवेशकों एवं कारोबारियों तक है। भारत का बड़ा बचत कर्ता वर्ग जो कस्बों एवं ग्रामीण इलाकों में निवास करता है उसका इन तकनीकों एवं सूचनाओं तक पहुँच न के बराबर है। किन्तु सूचना प्रौद्योगिकियों के त्वरित प्रसार ने बड़ी जनसंख्या की पहुँच निवेश सूचनाएं एवं निवेश साधनों तक बनायी है। कोविड-19 महामारी काल में नये निवेशकों विशेषकर युवा निवेशकों को नये निवेश गंतव्यों की ओर धकेला है।

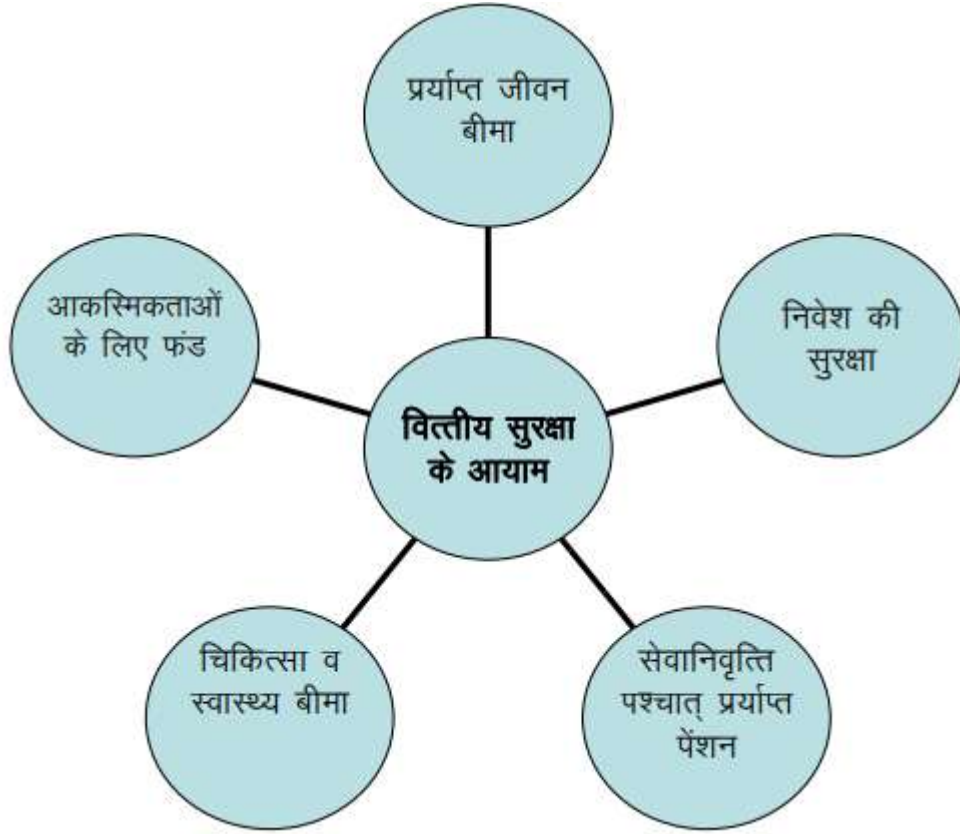
लाभ, सुरक्षा व तरलता वित्तीय नियोजन के तीन महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं। सुरक्षा किसी भी व्यक्तिगत वित्तीय नियोजन का प्राथमिक उद्देश्य होना चाहिए। मेहनत से कमाए गए धन की सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। भारत जैसे निम्न आय अर्जन करने वाले देश में यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। पारम्परिक रूप से भारतीय धन की सुरक्षा को अधिक महत्व देते हैं। इस कारण वर्तमान में भी पारम्परिक निवेश माध्यम ज्यादा प्रचलित हैं

जैसे सावधि जमा (F.D), मियादी जमा (R.D), बचत बैंक जमा तथा पोस्ट ऑफिस की बचत व निवेश योजनाएँ। हमारा सोने के प्रति प्रेम सांस्कृतिक होने के साथ-साथ सुरक्षा की इच्छा भी है। क्योंकि हमारे पूर्वजों से लेकर वर्तमान तक के अनुभव हमें बताते हैं कि बुरी से बुरी आर्थिक परिस्थितियों में सोना सुरक्षित व तरलता देने वाला माध्यम है। किंतु प्रतिफल जो दिखता आकर्षक है, किंतु वह महंगाई की वृद्धि की तुलना में कम ही होता है। हमारा सोने में निवेश अधिकांश आभूषणों के रूप में होता है। जिसमें मिलावट, बेचने पर साहूकार अथवा स्वर्णकारों द्वारा की जाने वाली कटौती के कारण सोने के दामों में हुई वृद्धि का लाभ निवेशक तक नाममात्र का ही पहुँचता है।



भारतीयों को पारम्परिक रूप से सुरक्षित साधनों में निवेश करने वाला माना जाता है। वे स्थायी सम्पत्तियों में निवेश करना ज्यादा पसंद करते हैं। इसका लाभ यह है कि वर्तमान पीढ़ी अपने पुरखों द्वारा जोड़ी गयी जमीनों, सोने आदि स्थायी सम्पत्तियों का लाभ ले रही हैं। किंतु वर्तमान में भूमि, भवन व सोने में निवेश आम उपभोक्ताओं की पहुँच से दूर होता जा रहा है। भूमि का एक निवेश के माध्यम के रूप में भारत में संतुलित विकास नहीं हो पाया है। बड़े शहरों व बड़े शहरों के आस पास के क्षेत्रों (सेटेलाइट शहर) में भूमि प्रयाप्त रिटर्न देती हैं। किंतु दूरस्थ क्षेत्रों में भूमि सहित सभी रियलिटी सेक्टर में किये गये निवेश का पर्याप्त लाभदायक होना दूर की कौड़ी है। शहरों की ओर तीव्र पलायन ने शहरों व उसके आस-पास की भूमि व भवन को चमकदार निवेश साधन बनाया है। भूमि के मामलों में धोखाधड़ी, भू अभिलेखों की अस्पष्टता आदि भूमि को अति जोखिम वाला निवेश बनाती है। आवासीय भवन सभी भारतीयों की पहुँच से अभी दूर है। निवेश के रूप में भी आवासीय परिसम्पत्तियां पर्याप्त लाभदायक नहीं हैं। जानकारों के अनुसार आवासीय सम्पत्ति से प्रतिवर्ष लगभग 1.5 से 2.5 प्रतिशत तक का ही प्रतिफल प्राप्त होता है।

सुरक्षा संबंधी दूसरा पहलू आय की सुरक्षा तथा सेवानिवृत्ति पश्चात आय की निश्चितता है। कार्यशील आयु(15 से 60 वर्ष) में अपने परिवार तथा निर्भर व्यक्तियों की वित्तीय सुरक्षा हेतु जीवन बीमा आवश्यक हो जाता है। जीवन बीमा संबंधी कई उत्पाद बाजार में उपलब्ध हैं तथा सरकारी स्वामित्व वाले जीवन बीमा सहित कई कम्पनियां बहुतायत में बीमा उत्पाद उपलब्ध कराती हैं। डाक जीवन बीमा तथा ग्रामीण डाक बीमा, डाक विभाग की बीमा योजनाएं हैं। डाक जीवन बीमा के सरकारी विभागों, संस्थाओं, निगमों में कार्यरत कर्मिकों के लिए उपलब्ध जीवन बीमा है। वहीं ग्रामीण डाक जीवन बीमा भारत के ग्रामीणों के लिए उपलब्ध जीवन बीमा है। डाक विभाग के उपरोक्त दोनों उत्पादों का परिचालन व्यय कम होने के कारण ये सबसे सस्ते जीवन बीमा उत्पाद हैं। इनके अतिरिक्त अधिकांश जीवन बीमा उत्पाद महंगे हैं तथा इनका वार्षिक प्रतिफल बमुश्किल 3 से 4 प्रतिशत तक ही होता है जो हमारी सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करता है। इसी प्रकार एक अन्य उत्पाद यूनिट लिंक बीमा पॉलिसी है। यह उत्पाद न तो शुद्ध रूप में बीमा उत्पाद है ना ही पूँजी बाजार में निवेश उत्पाद। यूनिट लिंक बीमा उत्पादों में देय प्रीमियम का एक बड़ा भाग पॉलिसी के रख रखाव, कमीशन आदि पर व्यय हो जाता है।



वर्तमान कोविड-19 त्रासदी ने स्वास्थ्य बीमा के साथ सामान्य बीमा की आवश्यकता को रेखांकित किया है। परिवार के कमाऊ सदस्य के साथ अनहोनी हाने पर परिवार की वित्तीय सुरक्षा भी खतरे में पड़ जाती है। अतः परिवार के लिए अर्जन करने वाले का एक सामान्य बीमा होना आवश्यक है। विशेषज्ञों के अनुसार उक्त बीमा की बीमित धनराशि सामान्यतः वार्षिक आय के लगभग 20 गुना के बराबर होनी चाहिए। इस प्रकार की सामान्य बीमा पालिसी अधिकांश बैंक, वित्तीय संस्थान तथा बीमा कम्पनियां उपलब्ध करा रही हैं। अपनी आवश्यकता के अनुसार अनुसंधान करके तथा बीमा कंपनी का ग्राँस सैटलमेंट रेट देखकर उचित पॉलिसी का क्रय किया जाना चाहिए। कम आयु में इन पॉलिसियों को लेने में प्रीमियम कम पड़ता है। साथ ही साथ परिवार के सभी सदस्यों

अथवा अधिकतम सदस्यों को स्वास्थ्य बीमा से भी कवर किया जाना आवश्यक है। क्योंकि वर्तमान में ईलाज, जाँच व दवाईयों के अत्यधिक महंगा होने के कारण साधारण सी बीमारी भी बचत का अधिकांश हिस्सा लील जाती है। इस दिशा में प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना(PMJAY) मील का पत्थर है। जिसके अंतर्गत बिना किसी प्रीमियम के परिवार का रूपये 05 लाख तक की चिकित्सा प्रति वर्ष नकदी रहित है।

कार्यशील आयु में पेंशन में निवेश सेवानिवृत्ति पश्चात् वित्तीय स्वायत्ता एवं सुरक्षा के लिए आवश्यक है। वर्तमान में सरकारों द्वारा कई पेंशन योजनाएं संचालित हो रही हैं। 01 जनवरी 2004 से प्रारम्भ हुई राष्ट्रीय पेंशन योजना जिसे 2009 के बाद भारत के सभी नागरिकों के लिए खोल दिया गया। यह पेंशन योजना सभी को

सेवानिवृत्ति के बाद वित्तीय सुरक्षा के लिए एक गम्भीर प्रयास है। पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण(PFRDA) राष्ट्रीय पेंशन योजना का नियामक है। जिस कारण प्रारम्भ होने से वर्तमान तक इस योजना में प्रतिफल की दर लगभग सभी उत्पादों से सर्वोत्तम है। हाल ही में इस योजना से निकलने पर बने कॉर्पस का 60 प्रतिशत जो नकद भुगतान किया जाता है, को भी निवेश व लाभ की तरह कर मुक्त कर दिया है। लंबे समय तक राष्ट्रीय पेंशन योजना में निवेशित रहने से पर्याप्त कॉर्पस का निर्माण होता है जो कार्य ना कर पाने की आयु में समुचित वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है। वर्तमान में इस योजना की एकमात्र कमी अच्छे एन्युटी उत्पाद ना मिल पाना है। जिसका कारण भारत में एन्युटी सेवा प्रदाता कम्पनियों का विकासशील अवस्था में होना है। राष्ट्रीय पेंशन योजना में निवेश के कारण आयकर में अतिरिक्त 50000 की छूट इसके आकर्षक निवेश गंतव्य होने का एक अन्य कारण है।

वित्तीय सुरक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम लगभग 06 माह के व्ययों हेतु आकस्मिक फंड का निर्माण करना है। यह फंड रोजगार प्रभावित होने अथवा अन्य कारणों से आ रही नियमित आय में व्यवधान की स्थिति में जीवन यापन को बाधित होने से बचाएगा। यह फंड बैंक सावधि जमा, पोस्ट आफिस की किसी तरलता वाली योजना में अथवा तरल साझा कोष (लिव्क्विड म्यूचुअल फंड) में हो सकती है। म्यूचुअल फंड सेवा प्रदाता अत्यधिक तरल फंड, ओवर नाईट फंड आदि कई योजनाएं संचालित करते हैं जिनसे मिलने वाला प्रतिफल अधिकांशतः परम्परागत वित्तीय उत्पादों से बेहतर ही होता है। आकस्मिक फंड ऐसे निवेश गंतव्य में होना चाहिए जिसे आकस्मिकता की स्थिति में तत्काल भुनाया जा सके।

सुरक्षा के पश्चात लाभ व तरलता निवेश के महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं। लाभ व तरलता के लिए हमने पूर्व में भी परम्परागत निवेश गंतव्यों का विश्लेषण किया। रियलिटी सेक्टर व सोने को छोड़कर परम्परागत वित्तीय उत्पाद प्रचलित महंगाई की दर से कम प्रतिफल प्रदान करते हैं। रियलिटी सेक्टर व सोने में निवेश प्रतिफल अत्यधिक अनिश्चितता तथा कई समस्याएं लिया हुआ है। वर्तमान में पूँजी बाजार एक आकर्षक निवेश गंतव्य के रूप में उभरा है। ये निवेश गंतव्य आजादी के पूर्व से ही है किंतु ये भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई तथा अन्य महानगरों में ही उपलब्ध था। उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण अपनाने के बाद से गैर परम्परागत निवेश साधनों तक आम जन की पहुँच बढ़नी शुरू हुई। सूचना तकनीकों के विकास ने इस क्षेत्र के फैलाव में निर्णायक भूमिका निभायी है। इन्टरनेट व इन्टरनेट बैंकिंग के विकास के कारण भारत के गाँव, छोटे शहरों व कस्बों तथा सूदूरवर्ती क्षेत्रों के निवासी भी बाजार आधारित वित्तीय उत्पादों में निवेश कर रहे हैं।

पूँजी बाजार में निवेश का प्रारम्भ लक्ष्य निर्धारण से होता है। लक्ष्य के अनुसार निवेश साधन का चयन करते हैं। बाजार आधारित उत्पादों को हम पूँजीगत व ऋण आधारित उत्पादों में बाँट सकते हैं। ऋण आधारित उत्पादों में निजी कम्पनियों, सरकार व उसके उपक्रमों, केन्द्रीय बैंक, केन्द्रीय बैंक के नियंत्रणाधीन बैंकों, निजी व राष्ट्रीयकृत बैंको द्वारा जारी ऋणपत्र एवं बॉण्ड हैं। ये ऋणपत्रों एवं बॉण्डस निश्चित समयावधि वाले होते हैं। इनसे मिलने वाला प्रतिफल जिसे ब्याज कहा जाता है वार्षिक या छःमाही पूर्व निश्चित समय पर प्राप्त होता है जो ऋणपत्र एवं बॉण्ड जारी करते समय ही निश्चित किया जाता है। परिपक्व होने पर इन ऋणपत्र एवं बॉण्ड के मूलधन का भुगतान निवेशक को कर दिया जाता है। कुछ

ऋणपत्र परिपक्वता पर समता शेयरों में परिवर्तित हो जाते हैं जो ऋणपत्र जारी करते समय ही कम्पनी निश्चित कर देती है। सरकार या सरकारी संस्थानों द्वारा जारी ऋणपत्र सर्वाधिक सुरक्षित निवेश है। कम्पनीयों द्वारा जारी ऋणपत्र बाजार आधारित जोखिमों के अधीन होते हैं। ऋणपत्र एवं बॉण्ड नियमित एवं निश्चित आय प्रदान करने वाले उत्पाद हैं।

तरलता व लाभ के उपरोक्त सभी उत्पाद महंगाई के प्रभाव को नजरअंदाज करते हैं। लगातार बढ़ती महंगाई की दर हमारी बचतों को संकुचित करती है। महंगाई की दर से अधिक प्रतिफल प्राप्त करने हेतु कम्पनी अंशों में निवेश प्रचलित माध्यम है। अंश अथवा शेअर पूर्णतः बाजार के उतार चढ़ाव के अनुरूप प्रतिफल देने वाले निवेश उपकरण हैं। अंश दो प्रकार के होते हैं समता अंश तथा पूर्वाधिकारी अंश। पूर्वाधिकारी अंश वे समता अंश हैं जो लाभ व पूंजी पर कुछ पूर्वाधिकार लिए हुए होते हैं। मूलतः समता अंशधारी कम्पनी पर अपनी निवेशित धनराशि के बराबर स्वामित्व व उत्तरदायित्व रखते हैं। इस निवेशित राशि पर वे प्रतिवर्ष लाभांश (यदि कम्पनी घोषित करती है व बाटँती है) प्राप्त करते हैं। बाजार के उतार चढ़ाव तथा कम्पनी के प्रदर्शन के अनुरूप अंशों के मूल्य घटते बढ़ते हैं। अच्छे समता अंशों पर प्रतिफल की दर लंबे समय में महंगाई की दर से अधिक रही है।

समता या इक्विटी में सीधे निवेश के लिए एक डीमैट खाता, बैंक खाता तथा शेअर ब्रोकर के यहाँ लेन देन के लिए खाता आवश्यक है। ब्रोकर निवेशक के आदेशानुसार अंशों का क्रय विक्रय करता है। अंशों में सीधे निवेश ज्ञान आधारित निवेश है। इसके लिए सावधानी, शोध, बाजार की समझ तथा धैर्य आधारभूत योग्यताएं हैं। निवेशक जिस कम्पनी के शेअर में प्राथमिक अथवा द्वितीयक बाजार के माध्यम से निवेश कर रहा है

उसके बारे में आवश्यक जानकारी इकट्ठा करता है। जिस कम्पनी में निवेश किया जा रहा है उस कम्पनी का व्यापार क्या है? कम्पनी के प्रवर्तक, निदेशक तथा प्रबंधक कैसे हैं? कम्पनी के कार्य करने का तरीका क्या है? जिस कम्पनी में निवेश किया जा रहा है उसके द्वारा किये जाने वाले व्यापार का भविष्य क्या है? ये कुछ आधारभूत प्रश्न हैं जिनकी जानकारी निवेश से पूर्व आवश्यक है।

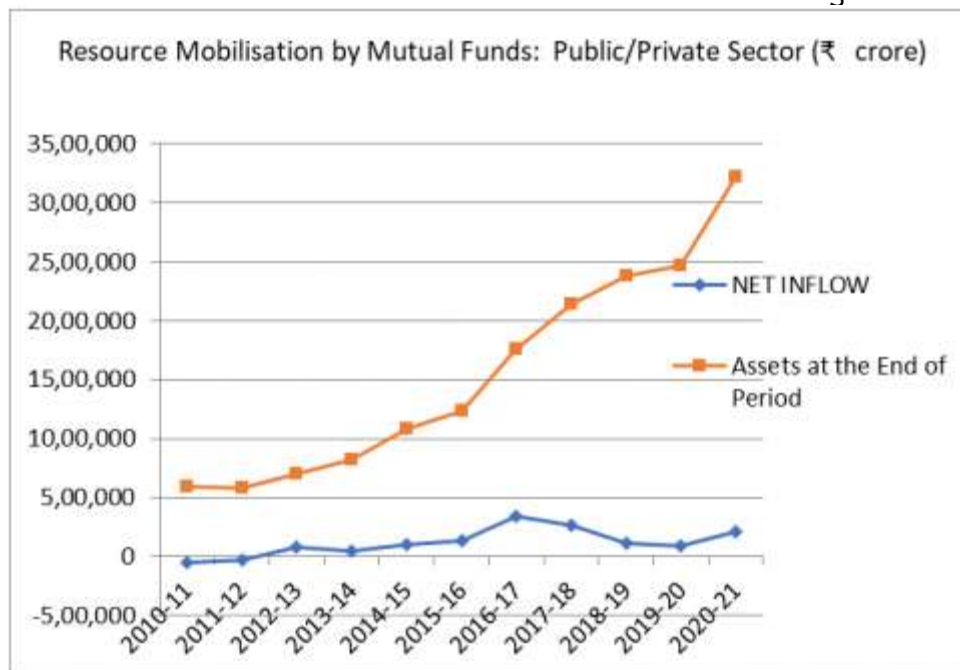
शेअर बाजार की वर्तमान तेजी ने कई नये व युवा निवेशकों को आकर्षित किया है। सूचना प्रौद्योगिकीयों के विकास से आम निवेशक भी शेयर बाजार में सीधे निवेश कर रहा है। कई एप्लीकेशन बगैर ब्रोकरेज दिये सीधे निवेश की सुविधाएँ प्रदान कर रहे हैं। अन्य कई मोबाईल एप्लीकेशन वित्तीय सलाहकार के रूप में सुविधाएं दे रहे हैं। ये सुविधाएं अंशों में निवेश को सरल बनाने के साथ साथ नये निवेशकों को सीखने के लिए बेहतर हैं। अंशों में निवेश का ककहरा सीखने के लिए इन माध्यमों में ऐसी धनराशि का ही निवेश किया जाना चाहिए जिसके डूब जाने पर भी हमारी वित्तीय सुरक्षा खतरे में नहीं पड़े।

अंश बाजार में निवेश करने का एक अन्य माध्यम म्यूचुअल फंड के माध्यम से निवेश है। म्यूचुअल फंड हाउस या साझा कोष पूरे देश में अथवा देश के बाहर फैले छोटे बड़े निवेशकों से उनकी बचतों को इकट्ठा करते हैं। इस प्रकार एकत्रित धन को फंड मैनेजर अंश बाजार में विभिन्न जोखिम प्रतिफलों के आधार पर विभिन्न सम्पत्ति वर्गों में निवेश करते हैं। ये फंड प्रबन्धक अनुभवी एवं निवेश मामलों के विशेषज्ञ होते हैं। लगातार निवेश एवं फंड के रखरखाव हेतु ये फंड हाउस कुछ शुल्क लेते हैं जो अन्य निवेश माध्यमों की तुलना में काफी कम होता है। इस प्रकार म्यूचुअल फंड में निवेश न्यून व्यय पर महंगाई की दर से ज्यादा प्रतिफल देने वाला निवेश साबित

हुआ है। साझा कोषों में निवेश सुनियोजित तरीके से किया जा सकता है। जिसे सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (SIP) कहा जाता है। सिप के माध्यम से निवेश करने पर हम बाजार के दैनिक उतार चढ़ाव के दुष्प्रभावों से बच जाते हैं। वर्ष में नियमित समयान्तराल पर होने वाले निवेश से औसतीकरण का लाभ, हानि को कम करने में मदद करता है।

म्यूचुअल फंड तेजी से उभरता हुआ निवेश गतव्य है। कोविड-19 आपदा के शुरूआती दो तिमाही के बाद से साझा कोषों में निवेश अभूतपूर्व रूप बढ़ा। वर्तमान में सार्वजनिक क्षेत्र की 06 कम्पनियां व निजी क्षेत्र की 40 कम्पनियां साझा

कोष कम्पनियों (पारस्परिक निधि) के रूप भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI) में पंजीकृत थीं। वित्तीय वर्ष 2010-11 की तुलना में वित्तीय वर्ष 2020-21 में पारस्परिक निधियों के द्वारा सम्पत्तियों के प्रबन्धन में 26.24 लाख करोड़ की वृद्धि हुई है। वित्तीय वर्ष 2010-11 में साझा कोष में शुद्ध निवेश नकारात्मक था (सब-प्राइम संकट के कारण) जो वर्ष 2012-13 से लगातार सकारात्मक रहा है। कोविड-19 से उत्पन्न वैश्विक पूर्णबंदी ने निवेशकों के मनोविज्ञान को प्रभावित किया। किंतु वित्तीय वर्ष 2020-21 में आश्चर्य जनक रूप से म्यूचुअल फंड्स में शुद्ध आगम (Net Inflow) में 30 फीसदी से ज्यादा की बढ़त हुई।



1. Includes repurchases as well as redemption.

1. Includes repurchases as well as redemption.
2. Erstwhile UTI has been divided into UTI Mutual Fund (registered with SEBI) and the Specified Undertaking of UTI (not registered with SEBI). Above data contains information only for UTI Mutual Fund.
3. Erstwhile UTI has been divided into UTI Mutual Fund (registered with SEBI) and the Specified Undertaking of UTI (not registered with SEBI). Above data contains information

only for UTI Mutual Fund.
Source: SEBI.

म्यूचुअल फंडों के कई वर्गीकरण हो सकते हैं। समता व ऋण के आधार पर निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. समता (इक्विटी) आधारित साझा कोष । इन्हें निवेश की जाने वाली कम्पनियों के पूंजी की मात्रा के अनुसार इन्हें आगे वर्गीकृत किया जाता है। एक प्रकार से ये कम्पनी के आकार के अनुसार विभाजित फंड हैं। पूंजीकरण की मात्रा के अनुसार ये लार्ज कैप, मीडियम कैप, स्माल कैप तथा मिश्रित पूंजीकरण वाले फंड हो सकते हैं।

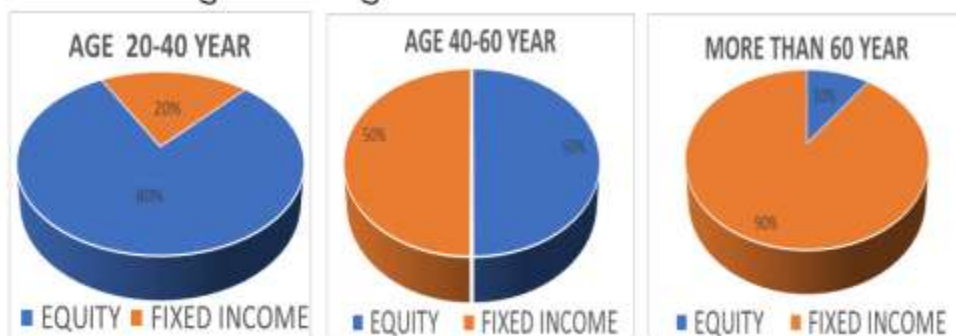
2. ऋण (डेब्ट) आधारित साझा कोष । ये परिपक्वता अवधि के आधार पर लॉग टर्म, शार्ट टर्म, अल्ट्रा शार्ट टर्म, ओवर नाईट फंड इत्यादि हो सकते हैं। कुछ साझा कोष समता व ऋण के मिश्रित उत्पाद प्रदान करते हैं।

निवेश का प्रारम्भ निवेश का लक्ष्य निर्धारण से होता है। बगैर लक्ष्य निर्धारण का निवेश बेतरतीब और असफल हो सकता है। बिना उद्देश्य का निवेश, निवेश प्राप्तकर्ता के लक्ष्यों की पूर्ति करता है। ये वित्तीय लक्ष्य किसी सम्पत्ति का क्रय, निवेशकर्ता का विवाह, भवन निर्माण, पाल्यों की शिक्षा तथा विवाह, सेवानिवृत्ति के बाद नियमित आय आदि कुछ भी हो सकता है।

निवेश हेतु आवश्यक धन की व्यवस्था कर हम निवेश के समय का निर्धारण करते हैं। निवेशित रहने का समय वित्तीय लक्ष्य के अनुरूप होता है । वित्तीय उद्देश्यों के अनुसार निवेश के साधनों का निर्धारण निवेश करने का तीसरा चरण है। निवेशकर्ता के जोखिम लेने की क्षमता निवेश के साधन निर्धारण का आधार है। यह क्षमता उम्र,

आवश्यकता, के अनुसार अलग अलग हो सकती है। दरअसल जोखिम लेना व्यक्तित्व का एक पहलू है। किंतु बिना समझ के जोखिम लेने से मूलधन की क्षति हो सकती है। इसके बाद हम पूर्व निर्धारित समयों पर निवेश का मूल्यांकन करते हैं । वांछित परिणाम ना आने की स्थिति में हम रणनीति का पुर्ननिर्धारण करते हैं । तत्पश्चात् लक्षित समय तक उपरोक्त संपूर्ण प्रक्रिया का सतत मूल्यांकन करते हैं।

जोखिमों के विविधिकरण के लिए उपरोक्त चर्चा किए गये समस्त माध्यमों में निवेश किया जाना चाहिए। इस हेतु पोर्टफोलियो का निर्माण किया जाता है। पोर्टफोलियो निवेश का एक समुच्चय है। एक संतुलित पोर्टफोलियो में निश्चित आय, सुरक्षा, संवृद्धि आदि का समावेश होना चाहिए। इस हेतु शेअर, म्युचुअल फंड, सोना, बॉण्ड, रियल स्टेट, पोस्ट ऑफिस, एफडी0 आदि में निवेश हो सकता है। ये निवेश समुच्चय आय वर्ग, आयु के अनुसार अलग अलग हो सकते हैं। जैसे एक युवा निवेशक के लिए पोर्टफोलियो आक्रामक जबकि सेवानिवृत्त व्यक्ति के लिए यह निश्चित आय देने वाला अथवा निवेश की सुरक्षा को प्राथमिकता देने वाला हो सकता है। सभी परिस्थितियाँ सामान्य होने पर विभिन्न आयु वर्ग के लिए पोर्टफोलियो में जोखिम व सुरक्षा का अनुपात निम्न हो सकता है।



निष्कर्ष

मेहनत से कमाये गये धन का उचित माध्यम में निवेश कमाने की तरह ही एक महत्वपूर्ण वित्तीय कार्य है। इस हेतु निरन्तर सीखना एवं समझ को विकसित किया जाना चाहिए। निवेश का कोई भी माध्यम जोखिम रहित नहीं है। अतः जोखिमों का आकलन कर निवेश माध्यमों में समयानुसार बदलाव किया जाना चाहिए। साथ ही निवेश कुछ मूल्य बनाने एवं उन पर दृढ़ता से अमल किये जाने की प्रक्रिया है। साथ ही प्राचीन भारतीय मूल्य कि “परिवर्तन ही स्थायी नियम है” का पालन करते हुए निवेश माध्यमों का निरंतर मूल्यकन किया जाना चाहिए तथा नयी संभावनाओं का अन्वेषण किया जाना चाहिए। आर्थिक रूप से सशक्त ही किसी अन्य की सहायता कर सकता है। दूसरों की सहायता भी वित्तीय लक्ष्यों में शामिल होना चाहिए। अंतोगत्वा मन की शांति ही निवेश व समृद्धि का चरम उद्देश्य है।

संदर्भ

- जुबिन मेहता, चैताली कराटे, एक निवेशक की कहानी, भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड, मुंबई |
- भारत 2021, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- योजना विकास को समर्पित मासिक, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली (माह जनवरी 2019 से अक्टूबर 2021 तक की मासिक पत्रिकाएं) |
- www.sebi.gov.in
- www.valueresearchonline.com
- www.youtube.com
- www.publicatinsdivision.nic.in
- www.amfiindia.com
- www.thehindu.com